महिला आंदोलन और पत्रकारिता के वैकल्पिक प्रयोग

महिला सशक्तिकरण और विकास में महिला आंदोलन का अभिन्न योगदान हम सब एकमत से मानते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से 1970 के दशक से महिला आंदोलन की विधिवत शुरूआत मानी जाती है। यों अन्याय और शोषण के खिलाफ़ हक़ की आवाज़ और संघर्ष को हम किसी भी आंदोलन का मूल विचार मान सकते हैं। महिला आंदोलन का एकमात्र उद्देश्य महिला–हिंसा को चुनौती देने के साथ–साथ मानवीय अधिकारों के संघर्ष में शोषित और हाशियाबद्ध समुदायों को संगठित करना रहा है।

अधिकारों के इस संघर्ष में हम सभी का एक ही लक्ष्य है–महिला हिंसा के खिलाफ़ जागरूकता अभियानों, रैली, प्रशिक्षण कार्य के साथ साथ इन मुद्दों पर काम कर रही संस्थाओं के साथ आपसी सहयोग कायम करना, ताकि सहभागितापूर्ण अगुवाई करते हुए हिंसामुक्त माहौल की नई संभावनाओं और रणनीतियों को खोजा जा सके।

घरेलू हिंसा, बलात्कार, बालिका यौन–शोषण, महिलाओं के श्रम अधिकार, एकल महिलाओं के हक, महिला स्वास्थ्य और दैहिक अधिकार जैसे न जाने कितने ही ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर आंदोलन ने सदियों से व्याप्त खामोशी का आवाज़ दी है। यह महिला आंदोलन की ही देन है कि आज हम इन मुद्दों पर सशक्त कानूनों और महिला सुरक्षा के दावेदार बन पाए हैं। आंदोलन ने न सिर्फ़ महिलाओं की समस्या को पहचाना है, बल्कि हर मुद्दे को नारीवादी नज़रिए से समझा, परखा और विश्लेषित किया गया है। नतीजा आज हम विकास की नहीं सतत विकास की बात कर रहे हैं और राष्ट्रीय विकास में घर की चारदिवारी से लेकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक अपनी मेहनत और विवके का लोहा मनवा रहे हैं।

महिला आंदोलन की अनेकानेक देनों में से अभिन्न योगदान पत्रकारिता के क्षेत्र में रहा है, जिसकी ओर हम सबका ध्यान शायद सहजतः जाता नहीं है। आज मुख्य धारा की पत्रकारिता से इतर एक वैकल्पिक पत्रकारिता की समानांतर धारा प्रखर रूप से प्रवाहित है। इस धारा की अपनी कुछ विशेषताएं हैं जिनकी ओर इस आलेख में आपका ध्यान हम आकर्षित करना चाहेंगे। आज अखबारी और दृश्य माध्यमों में पत्रकारिता का जहां व्यवसायीकरण जोर पकड़ता जा रहा है, व्यवसायीकरण की दौड़ में मुख्य मुद्दे साइलाइन होते जा रहे हैं, मुद्दों का सेंसुअलाइजेशन होता जा रहा है, और मानवीय तथा महिला अधिकार के विषय लगभग गायब होते जा रहे हैं, पत्रकारिता का अपराधीकरण और केंद्रीकरण जिस तरह से बढ़ता जा रहा है–वैकल्पिक पत्रकारिता ने ऐसे माहौल में सामाजिक संवेदनाओं और मानव अधिकार मुद्दों पर वैचारिक जागरूकता का बीड़ा उठाया है।

आइये सबसे पहले हम समझें कि वैकल्पिक पत्रकारिता के तहत हम किन किन प्रयासों और प्रयोगों का शामिल कर सकते हैं– छोटे स्तर के सामूहिक पत्रिकाएं, न्यूज़लैटर,

सूचनापत्र, वेबसाइड, जानकारी पैकेट, दीवार लेखन, पर्चा और बैनर, वेब पत्रिकाएं, ब्लॉग स्पॉट तथा ग्रामीण कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम जिनके फलस्वरूप ग्रामीण स्तर पर महिलाओं व किशोरियों को कंप्यूटर साक्षर बनाते हुए जेंडर आधारित मुद्दों पर व्यापक समझ और जानकारियों प्रसारित की जाती रही हैं। ये सभी प्रयोग महिला संगठनों तथा सरकारी महिला साक्षरता कार्यक्रमों की सहायता से चल रहे हैं। इन सभी प्रयोगों के रहते महिला अधिकार मुद्दों पर ग्रामीण व शहरी स्तर पर जमीनी जागरूकता पैदा करने में अभूतपूर्व सफलता मिली है। वैकल्पिक पत्रकारिता ने मुख्यधारा और विकास कार्यक्रमों, जानकारियों और सूचनाओं तक आम जनता और खासतौर से महिलाओं की पहुंच को मजबूत किया है। बड़े–बड़े अखबारों में सरकारी भाषा में छपने वाली विकास कार्यक्रम और नीति सूचनाओं व जानकारियों को क्षेत्रीय स्तर पर आम औरत तक उसकी की भाषा और उसी की समझ के साथ पहुंचाने का ज़मीनी काम इस पत्रकारिता ने निभाया है।

पत्रकारिता और शब्द का अभिन्न रिश्ता इन वैकल्पिक प्रयोगों में सीमा को तोड़ता हुआ नजर आता है। अभिव्यक्ति के नए नए प्रयोग उसे असाक्षर ओर अनपढ़ लोगो तक भी पहुंचाने में सफल बनाता है। जो लोग पढ़ नहीं सकते–उनके लिए संकेतों और चित्राों के माध्यम से संदेश जारी करने और लोगों तक अपनी बात पहुंचाने के अभूतपूर्व प्रयास महिला संगठनों द्वारा किए गए हैं। इस क्षेत्र में दिल्ली की निरंतर, कृति, कथा, क्रिया, मार्ग, (कानूनी साक्षरता पर काम) एक्शन इंडिया (महिला हिंसा और जेंडर संवेदनशीलता), गुजरात/अहमदाबाद–दलित शक्ति केंद्र, अक्षरा–मुंबई, प्रेरणा भारती–प.बंगाल, अस्मिता–आंध्र प्रदेश, अखिल भारतीय मजदूर एवं किसान संगठन–राजस्थान, जैसे संगठनों ने इस क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रयास किए हैं।

वैकल्पिक पत्रकारिता के दृश्य प्रयोगों में सामाजिक मुद्दों पर डॉक्यूमेंटरी, छोटे–छोटे विषयगत स्पॉट्स, सामाजिक विज्ञापन ऐसे कुद प्रयोग हैं जिन्होंने पिछले कुछ सालों में महिला अधिकार और महिला हिंसा से जुड़े विषयों को आम घरों और बाजारों तक में चर्चा का विषय बनाया है। यह महिला आंदोलन के वैकल्पिक प्रयोगों की ही देन है कि आज विश्वविद्यालयों के पत्रकारिता पाठ्यक्रमों में जेंडर संवेदनशीलता, महिला हिंसा और महिला एवं बाल–अधिकार से जुड़े विषय विशेष महत्व प्राप्त कर सके हैं।

आज गैर सरकारी संगठनों तथा मानव–अधिकार संगठनों द्वारा अपने अपने कार्यक्षेत्र और स्तर पर अनेक ऐसे सीमित क्षेत्रीय अखबार, न्यूज़लैटर और जानकारी प्रपत्र जारी किए जा रहे हैं जो मुद्दा आधारित विषय की समाजिक और राजनैतिक विश्लेषण और आलोचनाएं कर रहे हैं। ज़िंदा लोग, दलित–आदिवासी संवाद, आदिवासी सत्ता ऐसे ही कुछ विशेष प्रयास हैं। इसके अलावा महिला सामख्याओं द्वारा जारी सूचनापत्रों सहित दिल्ली निरंतर द्वारा बुंदेलखंड के इलाके में 'खबर लहरिया' जैसे पत्रकारिता प्रयोग इलाकायी खबरों की

मानवीय और औरताना नजर से पड़ताल करते हुए इलाकाई विकास में अपनी खास भूमिका निभा रहे हैं। इसी प्रकार दिल्ली के अनेक गैरसकरारी संगठनों के एकमंच 'साझामंच' द्वारा लंबे समय से 'साझामंच' नाम से ही अखबार प्रकाशित किया जा रहा है–जिसने समाज के उपेक्षित, हाशियाबद्ध वर्ग की आवाजों को आवाज़ देते हुए सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों की निगरानी और आलोचनाओं में एक खास भूमिका निभाई है।

वैकल्पिक पत्रकारिता का मुख्य ध्येय– सामाजिक विकास के नाम पर सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों की मानवीय पड़ताल करना और लोगों तक उनकी जानकारी पहुंचाना है। सामाजिक विकास और महिला विकास के लिए काम कर रहे संगठनों और समूहों ने विकासात्मक विषयों और नीतियों पर महिलाओं की आवाजों को पुख्ता तरीके से समाज और नीति निर्माताओं तक पहुंचाया है। पहले भले ही यह सीमित स्तर के प्रयास माने जाते थे, लेकिन आज इन प्रयोगों ने नीति–निर्माताओं के जानकारी माध्यमों में अपनी एक खास पहुंच बनाई है और इसका सबसे बड़ा प्रमाण 'खबरलहरिया' और 'साझामंच' जैसे अखबारों के निरंतर प्रकाशन के प्रति सरकारी रुचि और उनके द्वारा उठाए गए मुद्दों पर सरकारी नीतियों में आने वाले बदलाव, सुझाव आमंत्रण, सुधारात्मक पहल के रूप में दिखाई देता है। *इसका ज्वलंत उदाहरण है– दिल्ली में विस्थापितों के मुद्दों और अधिकारों के प्रति सरकारी महकमों में सोच का बदलना।*

वस्तुतः अगर गौर से देखें तो पत्रकारिता के इन आंदोलनगत वैकल्पिक प्रयोगों ने आम औरत को एक इंसान की तरह सोचने, अपनी बात कहने और बड़े बड़े सामाजिक, राजनैतिक मुद्दों पर आलोचना और विश्लेषण का मौका दिया है। दूसरे शब्दों में कहें तो *आज एक आम औरत भी देश और समाज के विकास, महिलाओं और बच्चों के विकास, अधिकारों के लिए गढ़े जा रहे कार्यक्रमों और नीतियों के बारे में जानकारी रख सकती है तथा उन जानकारियों पर अपनी बात दूसरों तक पहुंचा सकती है।* ज़मीनी स्तर पर उन कार्यक्रमों और नीतियों के कार्यान्वयन और सफलता ही पड़ताल कर सकती है।

भले ही ये पत्र और पत्रिकाएं छोटे स्तर पर अपने कार्यक्रमों और प्रयासों की जागरूकता के लिए इन समूहों द्वारा निकाले जाते हैं मगर इनके माध्यम से आम जनता तक हर वो जानकारी सीधे सपाट अंदाज में पहुंचा दी जाती है जिनके रहते सरकारी और गैर सरकारी विकास कार्यक्रमों की सूचना आम लोगों तक नहीं पहुंचती और वे शोषण व अन्याय का शिकार होते हैं। *मानवीय अधिकारों पर सामाजिक और राजनैतिक जागरूकता का बीड़ा पत्रकारिता के इन वैकल्पिक प्रयोगों ने उठाया है और वे इसमें पूरी तरह कामयाब भी हुए हैं।*

पत्रकारिता को अखबारी पत्रकारिता और पत्रिकाओं की दुनिया से निकाल कर ज़मीनी स्तर पर उतारा है। आज हर महिला पत्रकार की तरह सोच सकती है, लिख सकती है। मुख्य

पत्रकारिता में जो मुद्दे महत्व प्राप्त नहीं कर पाते, याकि जिन्हें महिलाओं से जुड़ा हुआ माना ही नहीं जाता, याकि जिन पर महिलाओं की नजर से बात नहीं की जाती, याकि जिनके बारे में माना जाता है कि उनका महिलाओं या बच्चों से कोई लेना देना नहीं है(जैसे *सैनिकीकरण, आतंकवाद, सांप्रदायिकता, वैश्वीकरण, आर्थिक विकास और नीतियां)–ऐसे तमाम मुद्दे और विषय वैकल्पिक पत्रकारिता का वैचारिक केंद्र बने हैं, महिलाओं की नजर से, नारीवादी नजरिए से उन पर बात की गई है* और उस नजरिए को मुख्य धारा के पत्रकार–मुखियाओं के कानों में पहुंचाया गया है, सरकारी नीति–निर्माताओं का ध्यान उस ओर आकर्षित किया गया है। दूसरे शब्दों में यह साबित किया गया है कि कोई भी मुद्दा महिला अधिकार के मुद्दे से अछूता नहीं है, कोई भी ऐसा विषय नहीं है जो महिलाओं को प्रभावित न करता हो और कोई भी ऐसा वैचारिकता नहीं है जिस पर महिलाएं न बोल सकती हों।

मुझे गर्व है कि *जहां एक ओर आंदोलनरत के साथी समूहों ने एक आम औरत की आवाज को आम औरत के शब्दों और सोच के साथ न केवल सामाजिक बदलाव का केंद्र बनाया है, वहीं साहित्यिक और अकादमिक स्तर पर सत्री विमर्श जैसे वैचारिक संदर्भ खड़े किए हैं* जिन्होंने साहित्य की एक अलग आवाज़ को जन्म दिया है–एक ऐसी आवाज़ जो सदियों से घर की चारदिवारी और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के पुरुषवादी प्रपंचों में दबाई जाती रही थी। दिल्ली जागोरी द्वारा पिछले 15 सालों से प्रकाशित हम सबला, जागो बहन, बिहार से प्रकाशित जागो बहन, महिला समाख्या उत्तरांचल द्वारा प्रकाशित 'उत्तरा', रेणुदीवान द्वारा प्रकाशित नारी संवाद, अस्मिता (आंध्र प्रदेश), मार्गदर्शिनी , पिटारा, आधी दुनिया, पांचवां स्तम्भ, स्त्री मुक्ति जैसी अनेकानेक पत्रिकाएं नारीवादी सोच के साथ महिला अधिकारों से जुड़े विषयों और आवाज़ों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करती रही हैं। छोटे स्तर पर ही सही इन पत्रिकाओं ने सामाजिक और राजनैतिक मुद्दों पर नारीवादी समझ को मूल धारा में जगह दिलाई है। पत्रकारिता की वह मूल धारा जहां महिला मुद्दों को यदाकदा अपने पेजों में जगह देना एक शगल या फैशन बनकर रह गया है। कल्पांत, भारतीय पक्ष, सब लोग, अभिमूक नायक, तीसरी दुनिया, जिंदा लोग, आदिवासी सत्ता, लोकमत जैसी सामाजिक पत्रिकाएं मानवीय और सामाजिक राजनैतिक विषयों पर नारीवारी समझ को आवाज़ देने में अपनी अहम् भूमिका निभा रही हैं, इसके लिए वे प्रशंसा की पात्र हैं, किंतु यह बड़े ही खेद की बात है कि समुचित आर्थिक साधनों की कमी के रहते इन लघु–पत्रिकाओं का वजूद हमेशा खतरे में पड़ा रहता है।

वेब पत्रकारिता के प्रयोगों ने कंप्यूटर साक्षर महिला वर्ग को पूरे विश्व से जोड़ा है। आज वे घर बैठे विश्व स्तर पर अपने विचारों का आदान प्रदान, प्रकाशन और प्रसारण कर सकती हैं। बेशक इन प्रयोगों ने मुख्य पत्रकारिता में व्याप्त भाई भतीजावाद, भ्रष्टाचार और महिला

शोषण से किसी हद तक मुक्ति की गुंजाइशों को बढ़ाया है। इंटरनेट की असीम और खुली दुनिया ने अभिव्यक्ति के ऐसे असीमित पटल को हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है जहां हम विचारों, सूचनाओं और जानकारियों का अक्षय भंडार पाते हैं। इस भंडार में नारीवाद, नारीवादी वैचारिकता, राजनीति और अभिव्यक्ति का बेबाक, असीमित और श्रेष्ठतम जानकारी स्रोत मौजूद है। आज हम नेट पर अपने नाम की वेबसाइड, ब्लॉग और पेज बनाकर अपनी बात विश्व के लाखों पाठकों और संवेदनशील लोगों तक पहुंचा सकते हैं। *बेशक यह क्षेत्र अभी उपयोगात्मक दृष्टि से सीमित है, मगर वह दिन दूर नहीं जब हम पत्रकारिता के कंप्यूटर साक्षर नारीवादी पाठक वर्ग का एक बड़ा दायरा अपने आसपास पाएंगे–जो महिला मुद्दों पर अपनी ज़मीन से लेकर वैश्विक स्तर तक अपनी बात पहुंचाने और बहस को अंजाम देने में समर्थ होंगे।*

विषय की तरह ही पत्रकारिता के इन वैकल्पिक प्रयोगों में सीधी, सहज आम भाषा, अपनी क्षेत्रीय भाषा को प्रयोग किया जाता है। *खरी व सच्ची बात कहना इस भाषा की विशेषता है। छोटे स्केल की इस मारक पत्रकारिता में सत्यता, तथ्यता और संदर्भमय विश्लेषण को पूरी जगह दी जाती है*–क्योंकि उसका ध्येय ही आम जनता की वैचारिक समझ और जानकारियों को मजबूत बनाना है।

यह ज़मीनी संघर्षों से उपजी पत्रकारिता है जिसमें अभियानों, धरना–प्रदर्शनों, रैली जलसों और दीवार लेखन, स्लोगन–नारे, कार्यक्रमों के रिपोर्ट, सूचनाएं, समस्याएं, आंकड़े और आम आदमी की आवाज़ें पूरी जगह पाती हैं। नतीजा वह सच्चाई के कहीं अधिक करीब होती है और वैचारिक विश्लेषण का ज़मीनी रंग उसमें विश्वास और संघर्ष, नेतृत्व और संकल्प को पुख्ता करता है। वह मात्र खबर और सूचना जैसी उबाऊ न होकर आम आदमी और पाठक को एक बार सोचने और उस सोच को आगे ले जाने के लिए विवश करती है–शायद पत्रकारिता का यह जन्मजाता शगल कहीं लुप्त होता जा रहा है। *'कम से कम यहां लिखने वाले को कोई यह तो नहीं कहता कि आप वह लिखिए जो बिकता है!'*

यह अनुभवों से पकी पत्रकारिता है। अन्याय, अनाचार, झूठ और भ्रष्टाचार की खिलाफ़त के साथ संघर्ष, एकजुटता इस पत्रकारिता की मूल चेतना है। उसमें सिर्फ़ सूचनाएं और शाब्दिक प्रपंच नहीं है–अनुभवों की सच्चाई और हुंकार उसे कड़वा और कठोर बनाती है। मगर सत्य और प्रमाण उसमें कहीं अधिक करीब और विश्वसनीय रूप देते हैं। *अगर हम कहें कि पत्रकारिता की मुख्यधारा से इतर वैकल्पिक पत्रकारिता ने मानवीय चेतना और संघर्ष शक्ति को ज़िंदा रखा है–तो मुझे विश्वास है कि आप सभी मेरी इस बात का समर्थन करेंगे।*

वैकल्पिक पत्रकारिता एक शब्द आंदोलन है और इसके हम सभी योद्धा हैं।